



## अपराधियों की पहचान के लिये आईरसि और फगिरप्रटि स्कैनर का प्रयोग

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में महाराष्ट्र पुलिस ने स्वचालित मल्टी-मोडल बायोमेट्रिक पहचान प्रणाली (Automated Multi-modal Biometric Identification System-AMBIS) अपनाई है। इस प्रकार की प्रणाली की शुरुआत शीघ्र ही पूरे देश में की जाएगी।

### प्रमुख बंदि

- पुलिस जाँच में डजिटल फगिरप्रटि और आईरसि स्कैन प्रणाली का प्रयोग करने वाला महाराष्ट्र देश का पहला राज्य बन गया है।
- महाराष्ट्र सरकार नई दलिली में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के साथ मलिकर AMBIS के मानकों का नरिमाण करेगी, जसिसे इस प्रकार की प्रणाली को अन्य प्रदेशों में भी लागू कयिा जा सके।

### स्वचालित मल्टी-मोडल बायोमेट्रिक पहचान प्रणाली

#### (Automated Multi-modal Biometric Identification System- AMBIS)

- AMBIS इकाई में एक कंप्यूटर, एक कैमरा और आईरसि, फगिरप्रटि और हथेली का स्कैनर (Palm Scanner) शामिल होता है।
- इसमें अपराध के दृश्यों से उंगलियों के नशान को पकड़ने के लिये एक पोर्टेबल ससि्टम भी शामिल है।
- चेहरे की पहचान के लिये CCTV कैमरों की प्रणाली के साथ AMBIS का एकीकरण करने के बाद पुलिस की अपराधों को रोकने की दक्षता बढ़ जाएगी, साथ ही उन अपराधियों को पकड़ना आसान हो जाएगा जिनकी उंगलियों के नशान दशकों पूर्व कागज़ पर लिये जा चुके हैं।
- महाराष्ट्र राज्य के साइबर वभाग ने AMBIS को तैयार करने से पहले संघीय जाँच ब्यूरो, केंद्रीय खुफिया एजेंसी और संयुक्त राज्य अमेरिका में डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी और इंटरपोल द्वारा उपयोग कयिे जाने वाले मॉडल का अधययन कयिा।
- इंटरपोल के बायोमेट्रिक और चेहरे की पहचान प्रणाली को डजिाइन करने वाली फ्रेंच कंपनी को AMBIS स्थापति करने के लिये चुना गया है।
- यह प्रणाली यूएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्टैंडर्ड एंड टेक्नोलॉजी द्वारा नरिधारित मानकों के अनुरूप है।
- AMBIS प्रणाली को अभी महाराष्ट्र के उन थानों में लॉन्च कयिा जा रहा है, जहाँ पर पहले ही अपराध और आपराधिक ट्रैकिंग नेटवर्क एवं ससि्टम (Crime and Criminal Tracking Network and System-CCTNS) का बुनयिादी ढाँचा मौजूद है।
- महाराष्ट्र साइबर पुलिस वभाग ने वर्ष 1950 से लेकर वर्ष 2018 तक के 6.5 लाख से अधिक कागज़ों पर दर्ज कयिे गए उंगलियों के नशानों को डजिटलकृत कयिा है। इसका फायदा भी देखने को मलि रहा है, क्योंकि इस प्रणाली के प्रयोग से वर्ष 2014 के बाद के 85 घरों में चोरी के मामलों का खुलासा कयिा जा चुका है।

### महत्त्व

- इस प्रकार की प्रणाली के माध्यम से मृतक की पहचान करना आसान हो जाएगा, वशिषकर उन परसिथितियों में जब शरीर वकृत हो चुका होता है।
- रेटिना स्कैन के माध्यम से अपराधियों की पहचान आसान हो जाएगी क्योंकि रेटिना के अंदर रक्त वाहिकाओं की संरचना वशिष प्रकार की होती है।
- CCTV फुटेज और तस्वीरों के माध्यम से भीड़ हसिा जैसे मामलों में संदगिधों के चेहरे की पहचान की जा सकती है।
- रेलवे स्टेशनों जैसी भीड़भाड़ वाली जगहों पर आतंकवादी हमलों के मामलों में यह प्रणाली उपलब्ध 40% सटीक जानकारी से 50%- 60% तक सटीक जानकारी जुटा सकती है।
- इस प्रकार की प्रणाली में डेटा की हानि नहीं होती, साथ डेटा की उच्च बैकअप क्षमता भी मलिती है।
- फगिरप्रटि डेटा, राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो, जाँच एजेंसियों, अदालतों, अपराध वशिषज्जों और यहाँ तक कि इंटरपोल एवं वदिशी जाँच एजेंसियों के साथ साझा कयिा जा सकता है।

### स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

